बिहार उर्दू अकादमी, पटना के वर्ल्ड उर्दू कॉन्फ्रेंस में
महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का सम्बोधन

(दिनांक–21.03.2017, समय–पूर्वाह्न–10:00 बजे, स्थान–बिहार उर्दू अकादमी, पटना)

बिहार के अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के मंत्री डॉ॰ अब्दुल गफूर जी, मौलाना मजहरूल हक अरबी एवं फारसी विश्वविद्यालय, पटना के पूर्व कुलपति प्रो॰ एजाज अली अरशद जी, बिहार उर्दू अकादमी के सचिव श्री मुश्ताक अहमद नूरी जी, कनाडा से आए कवि श्री जावेद दानिश जी, उर्दू भाषा प्रोन्नयन की राष्ट्रीय परिषद् के निदेशक प्रो॰ सैयद इरतजा करीम जी, 'विश्व उर्दू–सम्मेलन' में भाग लेने आए उर्दू अदब के विद्वद्जन, शायरगण, उर्दूप्रेमीगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

मैं बिहार उर्दू अकादमी द्वारा आयोजित 'विश्व उर्दू सम्मेलन' में आकर अत्यन्त प्रसन्न्ता अनुभव कर रहा हूँ। अकादमी उर्दू जबान–व–अदब के विकास से संबंधित दो दिवसीय सम्मेलन कर रही है, जिसमें कई मुल्कों के नामचीन लेखक एवं कवि शामिल हुए हैं। दरअसल, यह बिहार के लिए अत्यन्त गौरव की बात है।

मित्रों, अगर हम जंग–ए–आजादी पर नजर डालें, तो हमें इस बात का एहसास होगा कि आजादी के समय उर्दू भाषा ने 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा देकर मुल्क के सभी लोगों को एक सूत्र में जोड़ने का काफी महत्त्वपूर्ण काम किया। उर्दू ने आजादी के समय कौमी एकजेहती की ऐसा मिशाल पेश की, जिसको हम कभी नहीं भुला सकते।

''सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है,
देखना है जोर कितना बाजू–ए–कातिल में है।''

''बिस्मिल अजीमाबादी'' का यह शेर तब मुल्क की आजादी के हरेक दीवानों की जुबान पर था। वाकई इस शेर से एक ऐसा जोश उमड़ता था कि आजादी के दीवाने अपनी गर्दन कटाना गर्व की बात समझते थे। आज के दौर में भी उर्दू भाषा गंगा–जमुनी–तहजीब की निशानी समझी जाती है। एक तरफ मीर, गालिब, जौक, मोमिन, दाग, अनीस, अल्लमा एकबाल, फैज, जोश जैसे शायरों का उर्दू शायरी में महत्त्पूर्ण योगदान है, तो दूसरी ओर चकबस्त, रघुवीर सहाय 'फिराक', जगन्नाथ आजाद, कुँवर महेन्द्र सिंह बेदी, गुलजार, जैसे गैर मुस्लिम कवियों का भी उर्दू–शायरी में बेमिशाल योगदान रहा है। यदि हम 'फिक्शन' की ओर देखें, तो सबसे पहले प्रेमचन्द पर निगाह ठहरती है, जिन्होंने 'फिक्शन' को सहारा देकर अपने पाँव पर खड़ा किया। उसके बाद कृष्ण चन्द्र, राजेन्द्र सिंह बेदी, महेन्द्र नाथ, रामलाल, बलराज मनेरा, जैसे बेशुमार उर्दू के गैर मुस्लिम फिक्शन–निगारों ने उर्दू गद्य–साहित्य को समृद्ध किया। अब अगर हम बिहार के उर्दू अदब की बात करें, तो शाद अजीमाबादी, शायरी के आसमान में एक चमकते हुए सितारे के भाँति नजर आते हैं। सोहैल अजीमाबादी को हम दूसरे प्रेमचन्द के रूप में देखते हैं। उनके बाद ग्यास अहमद गद्दी, अनवर अजीम, अहमद यूसूफ, शफी जावेद जैसे प्रख्यात अदीब हैं, जिन्होंने उर्दू कहानी को समृद्ध किया है। साहित्य अकादमी जैसी संस्था ने भी बिहार के बहाब अशर्फी, मजहर इमाम और इलयास अहमद गद्दी जैसे लेखकों को सम्मानित करके बिहार को गौरव प्रदान किया है। एक गौरतलब सच्चाई यह भी है कि पूरे भारत में आज जितनी भी उर्दू पत्रिकाएँ निकलती हैं, उनकी सबसे अधिक बिक्री बिहार में ही होती है। यह इस बात का परिचायक है कि पूरे मुल्क में कश्मीर के बाद बिहार में ही उर्दू जुबान बेहतर रूप में फल–फूल रही है।

हमारे समाज में अदब की बहुत अहमियत है। खास तौर से उर्दू अदब को चार चाँद लगाने में किसी एक मजहब के लेखकों का हिस्सा नहीं, बल्कि हिन्दू, मुस्लिम, सिख, सबने अपने

लेखन से उर्दू को समृद्ध किया है। उर्दू जबान पूरी दुनियाँ को प्रेम का पैगाम देती है। इस भाषा को जहाँ इस मुल्क के लेखकों ने समृद्ध किया है, वहीं दूसरे मुल्कों में रह रहे उर्दू के लेखकों एवं शायरों के योगदान को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। वे मुल्क से बाहर रहते हुए भी, अपनी उर्दू भाषा से प्रेम करते हैं और अपने लेखन से इसे विकसित करने में एक अहम भूमिका निभाते हैं। इस कॉन्फ्रेंस में आप उन रचनाकारों की रचना भी सुन सकेंगे।

बिहार के सभी विश्वविद्यालयों में उर्दू विभाग कार्यरत हैं, जिसमें अच्छे शिक्षकों के अलावा मेहनती बच्चे–बच्चियाँ भी हैं। हम यह आशा करते हैं कि सभी शिक्षक, उर्दू पढ़ने वाले बच्चों का एक ऐसा समूह तैयार करेंगे जो आगे चलकर उर्दू जुबान–व–अदब के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान करेंगे। इस भाषा के विकास के लिए सभी उर्दू भाषा–भाषी अपने जीवन के सभी क्षेत्रों में इसका प्रयोग करें और अपने बच्चों को शुरू में ही उर्दू की शिक्षा अवश्य दिलायें, ताकि वे अपनी तहजीब से भी जुड़ कर गौरव महसूस कर सकें। हमें यह याद रखना चाहिए कि उर्दू मात्र भाषा नहीं है, इसमें हमारी तहजीब भी बसी हुई है।

सरकार उर्दू भाषा व साहित्य के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। बिहार उर्दू अकादमी भी एक सक्रिय संस्था है, जो उर्दू के विकास के लिए कतिपय कार्य रही है। यह संस्था पुस्तकों पर ईनाम देती है, उर्दू पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के लिए आर्थिक सहायता देती है तथा उर्दू लाइब्रेरी को किताबें एवं राशि भी उपलब्ध कराती है। मैं मुल्क के बाहर से आये हुए लेखकों, अपने मुल्क और सूबे के उर्दू–लेखकों एवं सभी उर्दू प्रेमियों से यह गुजारिश करना चाहूँगा कि अपनी इस मीठी जुबान उर्दू के विकास के लिए प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर से हर संभव प्रयास करे।

मैं बिहार उर्दू अकादमी को इस भव्य आयोजन के लिए मुबारकबाद देना चाहता हूँ तथा यह कामना करता हूँ कि अकादमी निरन्तर, और अधिक शानदार आयोजन करती रहे, ताकि उर्दू अदब समृद्ध होता रहे। आप सबको बहुत बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द !!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।